

## शोध-सारांश

प्रवास मनुष्य जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। मनुष्य का प्रवास आदिकाल से आज तक निरंतर चल रहा है। प्रवास के दौरान एक मनुष्य अपने मूल स्थान को छोड़ किसी मेजबान स्थान पर जाता है। जो व्यक्ति प्रवास कर रहा है उसे प्रवासी कहा जाता है। बेहतर भविष्य और जीविकोपार्जन के लिए मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवासित होता रहता है। 19वीं शताब्दी में दास प्रथा के अंत के उपरांत उपनिवेशवादी देशों में श्रमिकों की कमी होने लगी जिसे देखते हुए अनुबंधित श्रमिक प्रणाली का आरंभ हुआ। अनुबंधन एक विश्वस्तरीय घटना थी। इसका आरंभ मॉरिशस में ब्रिटिश लोगों द्वारा किया गया। यह एक प्रयोग था, क्योंकि इस व्यवस्था के द्वारा दास प्रथा समाप्ति के बाद औपनिवेशिक सत्ता के हित में मजदूरों, श्रमिकों तथा कामगारों की पूर्ति बनाये रखने के लिए सफलतापूर्वक वर्षों तक चलाया गया।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में उपन्यास 'हम प्रवासी' और 'अफ्रीम सागर' को आधार बनाकर तुलनात्मक अध्ययन करते हुए प्रवासित गिरमिटिया मजदूरों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। जो भारतीय मजदूर एग्रीमेंट के तहत भारत से दूर किसी अन्य देश में गए उन्हें गिरमिटिया मजदूर कहा गया। प्रवास के दौरान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना आसान नहीं था, इन मजदूरों को एक लम्बी समुद्री यात्रा करनी पड़ती थी जोकि काफी भयावह होती थी। जब ये गिरमिटिया मजदूर मेजबान देश में पहुँचे तो इनके साथ वहाँ भी शोषण ही हुआ। भारत से प्रवासित मजदूरों का जीवन आरंभ से अंत तक कष्टदायक रहा तथा उनका जीवन पूर्णतः कठिनाइयों भरा रहा।

भारतीय अकुशल श्रमिकों के लिए विदेश प्रवास एक दुखद अनुभव होता है, क्योंकि वे बिचौलियों के माध्यम से वहाँ जाते हैं और एक औपनिवेशिक विदेशी सरकार के अंतर्गत अमानवीय व्यवहार करने वाले बेईमान नियोक्ताओं के अधीन काम करते हैं। जिन मालिकों के अधीन होकर ये काम करते हैं वे दिन-प्रतिदिन इनका पूर्ण रूप से शोषण करते हैं। इनका पूरा जीवन पीड़ामय रहता है, इन्हें हर कदम पर एक नयी चुनौती या कठिनाई का सामना करना पड़ता था।

अंततः यही कहा जा सकता है कि उपन्यास 'हम प्रवासी' और 'अफ़्रीम सागर' के माध्यम से धोखाधड़ी लम्बी समुद्री यात्रा या काले पानी की सजा, बदतर आवास, कठिन मेहनत, अपर्याप्त मजदूरी, महामारी, बीमारी, सांस्कृतिक समस्या, भाषा की समस्या तथा महिलाओं की दुर्दशा आदि को दिखाया है। अतः प्रस्तुत लघु शोध कार्य में गिरमिटिया मजदूरों द्वारा झेली गयी विभिन्न प्रकार की सभी यातनाओं को यथार्थ रूप में दिखाने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार भारत से प्रवासित हुए गिरमिटिया मजदूरों का जीवन आरंभ से अंत तक पूर्णतः कष्टदायक ही रहा।

## **Research Summery**

Migration has been important aspect of human life. Human migration is in gradual process from aboriginal stage to till date during migration. A person leaves his home land and moves to another host land. The person who is migrating is known as migrant. A person migrants from one place to another for better future and to earn bread and butter. In the 19<sup>th</sup> century, after the abolishment of slavery, there was shortage of labour in the colonial countries and due to this. The contractual labour system was started. In this scenario, contractual agreement was a global phenomeno. It was started by britishers in Mauritius. This was an experiment, because after the abolition of slavery, with the help of labourers, workers etc. the colonial regime was maintained successfully for years.

In this short research presentation on the basis of victim work namely 'Hum Pravasi' and 'Afeem Sagar' a competitive study has been done to showcase life of migrant labourers. Those Indian labourers who under some agreement migrated from India to any other country called indentured labour (Girmitiya Majdur), during migration. It was not easy to move from one place to another, these indentured labourers go through long voyage which used to be very terrible. When these indentures labourers reached the host country, there they were also exploited and oppressed by employees from beginning to end he lives of migrated. Indian labourer was painful and their life was filled full of with problems.

For unskilled Indian labourers, migration to foreign country always remain painful because they migrate with the help of middleman and they have to work in inhuman conditions under dishonest employees in foreign colonial government. They are exploited by those employees under whom they work on daily basis. The indentured labourers whole life remains painful as they face new challenges or difficulties on every step of life.

In the end it can only be said that from the said victim novel 'Hum Pravasi' and 'Afeem Sagar' cheating, voyage or black water sentence (Kala Pani Ki Saja), inferior habitation, insufficient wages, difficult work, epidemic, diseases, cultural problems, linguistic problems and conditions of women is shown, hence, the said short research work attempts to show the actual trouble faced by the indentured labourers. Therefore Indian migrant of indentured labourers from beginning to end was painful and pitiable.